International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 13-10-2020; Accepted: 28-10-2020; Published: 17-11-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 6; 2020; Page No. 53-54

स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक तथा शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. पूनम मदान[1], ज्योति सचान[2]
[1]डॉ. वीरेन्द्र स्वरूप इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेसनल स्टडीज्, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]शोध छात्रा, हिमालयन विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश, भारत

सारांश
शिक्षा किसी समाज का सर्वोच्च सकारात्मक पथ है शिक्षा वह तत्व है जो मानव के ज्ञान का अग्रिम पीढ़ी में सम्प्रेषण करता है मानव के शान के दो पक्ष होते है – अनुभव जन्म ज्ञान तथा स्मृतिजन्य ज्ञान। अनुभव मनुष्य के व्यक्तिगत होते है जबकि स्मृतियों से तात्पर्य विविध शास्त्रों एवं गुरूओं के माध्यम से प्राप्त ज्ञान है इन दोनों का अग्रिम पीढ़ी में समुचित एवं योग्य सम्प्रेषण ही शिक्षा का उद्देश्य है शिक्षा को भारतीय ज्ञान परम्परा में विशेष स्थान प्राप्त है ज्ञान के मूलश्रोत, स्वरूप, वेदों के अध्ययन एवं अर्थबोध के लिए अनिवार्य वेदांगों में शिक्षा को प्रथम स्थान दिया गया है

मूल शब्दः दार्शनिक, शैक्षिक विचारों, वर्तमान

प्रस्तावना
विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 में कलकत्ते में हुआ था। इनका नाम नरेन्द्र नाम था। वह बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। विज्ञान के छात्र होते हुये भी इनकी काव्य और दर्शन में अत्यधिक रूचि थी। पश्चिम के स्टुअर्ट मिल और हर्बर्ट स्पेंसर के दार्शनिक सिद्धान्तों का इन्होंने गम्भीर अध्ययन किया था। इनके कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री हेस्टी उनकी प्रतिभा से इतने अधिक प्रभावित थे कि उन्होंने कहा था कि मैंने अब तक बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति देखे हैं किन्तु नरेन्द्र की भाँति प्रतिभा सम्पन्न छात्र मुझे आज तक नहीं मिला। श्री हेस्टी ने ही नरेन्द्र को एक बार रामकृष्ण परमहंस से मिलने की प्रेरणा दी। वह रामकृष्ण परमहंस के पास पहुँचे और पूछा, क्या आपने ईश्वर को देखा है? परमहंस ने उत्तर दिया कि हाँ वैसे ही जैसे मैं तुमकों देख रहा हूँ, और यह कहते ही उन्होंने अपना दाहिना चरण नरेन्द्र के शरीर पर रख दिया। चरण के रखते ही नरेन्द्र को लगा जैसे सारा संसार घूम रहा है और एक शून्य में समाता जा रहा है। नरेन्द्र नाथ भय चीख पड़े। रामकृष्ण ने हँसते हुये कहा, ''अच्छा अब शांत हो जाओ।'' इस एक घटना को नरेन्द्र नाथ को पूर्ण रूप से बदल दिया। धीरे–धीरे वह रामकृष्ण परमहंस के निकट सम्पर्क में आते गये। उसके बाद से निरन्तर वे अपने गुरू के उपदेशों का प्रचार करते रहे और उनकी मृत्यु के बाद उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बन गये।

महत्व
स्वामी विवेकानन्द कट्टर वेदान्ती थे। वे वेदों और उपनिषदों द्वारा निर्देशित ज्ञान पर पूरी आस्था रखते थे। उन्होंने वेदान्त दर्शन को व्यवहारिक रूप दिया। उनका विश्वास था कि धर्म केवल पूजा–पाठ से सम्भव नहीं होता वरन् मनुष्यत्व एवं सत्यनिष्ठता से ही सम्भव होता है। ईश्वर से मिलने के लिये मन्दिर, मस्जिद जाना ही जरूरी नहीं है, वरन् कृषि क्षेत्र तक वो सभी सिल जहाँ निष्काम कर्म द्वारा मानव की सेवा की जाती है। स्वामी विवेकानन्द ईश्वर को तीन गुणों से सम्पन्न मानते हैं। यह तीन गुण हैं–

1. ईश्वर की सर्वव्यापकता,
2. सर्वगुण सम्पन्नता और
3. सर्वमुख सम्पन्नता,

विवेकानन्द के अनुसार इन तीन गुणों के समन्वय से ही आत्मा परमात्मा के साथ एकीकृत हो सकती है।

उद्देश्य
1. स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन का अध्ययन करना।
2. स्वामी विवेकानन्द के धार्मिक विचारों का अध्ययन करना।
3. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
4. स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन का वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

सुझाव
- ''स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन की उपयोगिता का मूल्यांकन करना।''
- ''स्वामी विवेकानन्द के उद्देश्यों के सन्दर्भ में रामकृष्ण मिशन के कार्यों का मूल्यांकन करना।''
- ''स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन का अन्य भारतीय दार्शनिकों एवं पाश्चात्य दार्शनिकों के शिक्षा दर्शन से तुलनात्मक अध्ययन करना।''
- ''स्वामी विवेकानन्द जी की धर्म शिक्षा की सार्थकता का वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में अध्ययन करना।''

सन्दर्भ
1. ओड, लक्ष्मी लाल, ''शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि'' हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008।
2. उपाध्याय, ''भारतीय दर्शन'', शारदा मनिदर, वाराणसी, 1986।
3. काणे, डॉ. पाण्डुरंगवामन, ''धर्म शास्त्र का इतिहास'' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान्, राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन, हिन्दी भवन, लखनऊ, 1962।
4. गंभरनन्द स्वामी, ''युग नायक विवेकानन्द'' तीन खण्ड,

रामकृष्ण मठ नागपुर, 1986।
5. गुप्ता, लक्ष्मी नारायण, ''महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री'', कैलाश प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, 1992।
6. गुप्ता, डॉ. एस0पी0, ''आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2002।
7. चौबे, डॉ0 सरयू प्रसाद, ''भारतीय शिक्षा का इतिहास'' राम नारायण लाल बेनी माधव, इलाहाबाद, 1986।